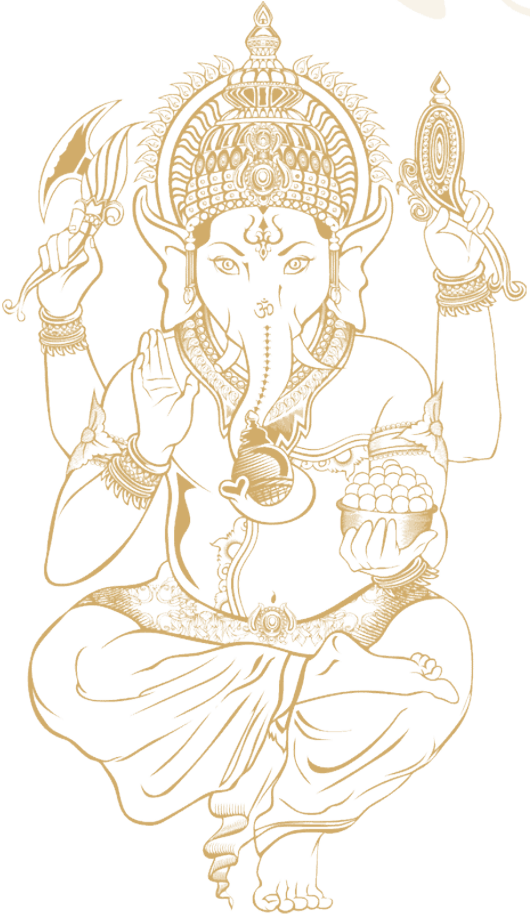

Anshu pandey

10 Jul 1998

11:40 AM

Gonda

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121720401

तिथि 10/07/1998 **समय** 11:40:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Gonda **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:50:04
अक्षांश 27:08:00 उत्तर **रेखांश** 81:58:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:02:08 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	06:49:45 घं	गण	मनुष्य
वेलान्तर	00:05:17 घं	योनि	नकुल
सूर्योदय	05:14:53 घं	नाड़ी	अन्त्य
सूर्यास्त	18:59:43 घं	वर्ण	वैश्य
चैत्रादि संवत	2055	वश्य	जलचर
शक संवत	1920	वर्ग	मूषक
मास	श्रावण	युँजा	अन्त्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	भूमि
तिथि	1	जन्म नामाक्षर	भो-भोली
नक्षत्र	उत्तराषाढ़ा	पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
योग	वैधृति	होरा	सूर्य
करण	कौलव	चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी	
सूर्य 3वर्ष 11मा 2दि	
राहु	
12/06/2019	
11/06/2037	
राहु	22/02/2022
गुरु	18/07/2024
शनि	25/05/2027
बुध	11/12/2029
केतु	29/12/2030
शुक्र	29/12/2033
सूर्य	23/11/2034
चन्द्र	24/05/2036
मंगल	11/06/2037

योगिनी	
संकटा 5वर्ष 2मा 22दि	
सिद्धा	
01/10/2024	
02/10/2031	
सिद्धा	10/02/2026
संकटा	02/09/2027
मंगला	12/11/2027
पिंगला	02/04/2028
धान्या	01/11/2028
भ्रामरी	12/08/2029
भद्रिका	02/08/2030
उल्का	02/10/2031

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			17:14:41	कन्या	हस्त	3	चंद्र	शनि	---	0:00			
सूर्य			23:58:18	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	बुध	सम राशि	2.03	अमात्य	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			01:17:03	मक	उत्तराषाढ़ा	2	सूर्य	गुरु	सम राशि	1.31	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल			08:47:12	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	गुरु	शत्रु राशि	1.15	मातृ	भ्रातृ	क्षेम
बुध			19:33:43	कर्क	आश्लेषा	1	बुध	शुक्र	शत्रु राशि	1.12	भ्रातृ	ज्ञाति	वध
गुरु			04:07:33	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	स्वराशि	1.41	ज्ञाति	धन	साधक
शुक्र			24:54:32	वृष	मृगशिरा	1	मंगल	राहु	स्वराशि	1.55	आत्मा	कलत्र	विपत
शनि			08:39:43	मेष	अश्विनी	3	केतु	गुरु	नीच राशि	1.06	पुत्र	आयु	मित्र
राहु	व		08:18:20	सिंह	मघा	3	केतु	गुरु	शत्रु राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		08:18:20	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

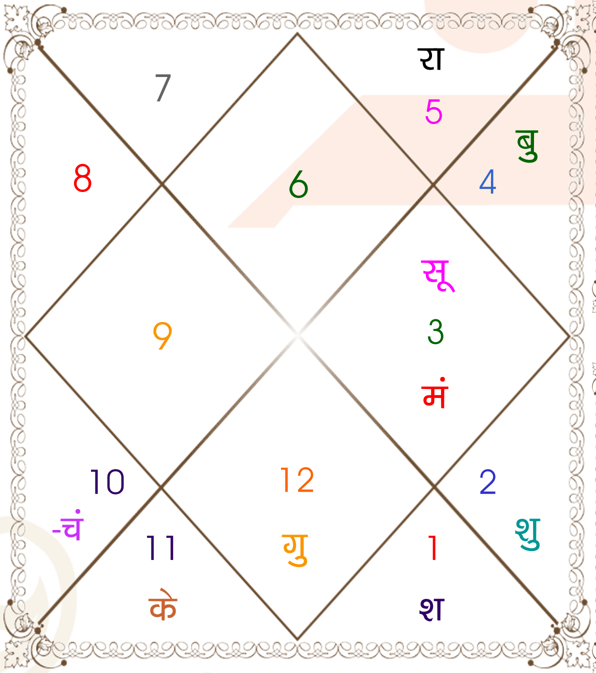

चन्द्र कुंडली

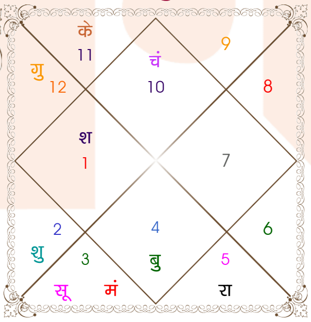

नवमांश कुंडली

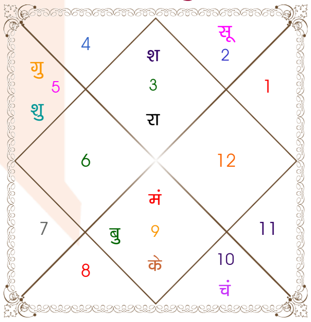

सर्वाष्टकवर्ग

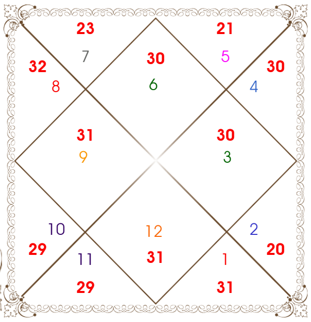

दशमांश कुंडली

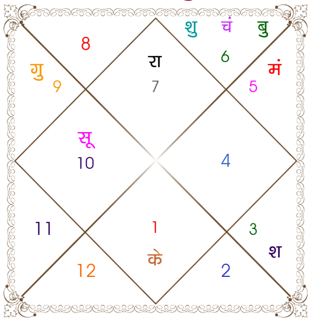

Acharya Ashok Shukla Vedpathi Shiva Shiv Astrology Research Centre
Brahmavidyapeeth Shukatirtha
9897180017
ashok.shukla.mzn@gmail.com

नक्षत्रफल

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म लेने के कारण आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि नकुल, वर्ग मूषक, गण मनुष्य, वर्ण वैश्य तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "भो" या "भौ" से प्रारम्भ होगा। यथा
आप अपने समाज में एक सम्माननीय महिला होंगी तथा सभी वर्गो के लोग आपको मान सम्मान प्रदान करेंगे। सात्विकता की भावना आप में विद्यमान रहेगी एवं सदगुणों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगी। साथ ही आपात्काल में भी शान्त स्वभाव से समस्याओं का सामना करके उनका समाधान करेंगी। साथ ही आप हमेशा विविध प्रकार के भौतिक सुखों का आनन्द पूर्वक जीवन में उपभोग करेंगी। धन दौलत का आपके पास आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे प्रायः सम्पन्न ही रहेंगी। नाना प्रकार के शात्रों का ज्ञानार्जन में भी आप सफलता प्राप्त करेंगी। अतः समाज में आप एक विदुषी के रूप में सम्मान तथा ख्याति प्राप्त करेंगी।

मान्यः शान्तगुणः सुखी च धनवान् विश्वर्क्षजः पंडितः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक सम्माननीय सात्विक गुणों से युक्त, सुखी, धनवान तथा पंडित होता है।

आपका स्वभाव शुरू से ही विनम्र रहेगा तथा सभी के साथ आप विनय पूर्वक अपना व्यव्हार रखेंगी। धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण निष्ठा रहेंगी तथा धार्मिक क्रियाओं का आप यत्न पूर्वक अनुपालन करने में तत्पर रहेंगी। आपके मित्रों की संख्या भी अधिक होगी तथा इन से पूर्ण सहयोग एवं आदर प्रदान करने में भी आप सफल रहेंगी। साथ ही कृतज्ञता के गुण से भी आप सम्पन्न रहेंगी तथा समाज में अन्य व्यक्तियों के द्वारा उपकृत होने पर उनका उपकार स्वीकार करेंगी एवं हृदय से उन के प्रति आदर का भाव प्रकट करेंगी। समाज के सभी वर्गो में आप लोकप्रियता को अर्जित करेंगी तथा उनकी सहायता के लिए भी सर्वदा तत्पर रहेंगी।

वैश्वे विनीत धार्मिक बहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च।।
वृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य विनयशील, धार्मिक, बहुत मित्रों वाला कृतज्ञ तथा सर्वजनों में लोकप्रिय होता है।

आपकी शारीरिक संरचना स्थूलता से युक्त रहेंगी तथा कद भी लम्बा रहेगा। आप हमेशा साहस तथा विनम्रता पूर्वक अपने कार्य कलाओं को सम्पन्न करेंगी तथा उन में सफलता भी प्राप्त करेंगी। साथ ही शत्रु वर्ग आपसे सर्वदा भयभीत रहेगा एवं झगड़े तथा विवाद आदि में भी आपसे प्रायः पराजित ही रहेंगे।

बहुमित्रो महाकायो जायते विनीतः सुखी।

उत्तराषाढ़सम्भूतः शूरश्च विजयी भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक अधिक मित्रों वाला, विशाल शरीराकृति से युक्त, विनयी, सुखी, शूरवीर और सर्वत्र विजय प्राप्त करता है।

आपके अन्तर्मन में स्वाभाविक रूप से दानशीलता की प्रवृति विद्यमान रहेगी तथा अपनी इस प्रवृति का पालन आप यथा शक्ति दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द लोगों को दान देकर पूर्ण करती रहेंगी। आप अच्छे कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा अन्य सामाजिक जन भी आपके सत्कार्यो से सन्तुष्ट रहेंगे तथा यदा कदा उनसे लाभान्वित भी रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपका परिवारिक जीवन भी सुखपूर्ण रहेगा। तथा पुत्रों से युक्त होकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी। आपका शारीरिक सौन्दर्य अत्यन्त ही दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा। परन्तु आप में अभिमान की भावना भी रहेंगी।

दाता दयावान विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुता समेतः।
कान्तासुतावाप्त सुखो नितान्तं वैश्वे सुवेषः पुरुषोळभिमानी।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, विजयी, विनयशील, सत्कार्यकर्ता, प्रभुत्व सम्पन्न, स्त्री और सन्तान से सुखी, अच्छे स्वरूप वाला तथा अभिमानी होता है।

रजत पाद में जन्म होने के कारण आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय रहेगी तथा इसमें पूर्ण कोमलता तथा कान्ति भी विराजमान रहेगी। आपकी मुखाकृति अत्यन्त ही सुन्दर एवं आकर्षक रहेगी। आपका इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा अनावश्यक इच्छाओं का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक इसका पालन करती रहेंगी आपकी गति मधुर एवं आकर्षक रहेगी। जीवन में धन सम्पति तथा पुत्र से आप सुसम्पन्न तथा प्रसन्न रहेंगी। आपके पति पूर्ण रूप से आपका सम्मान करेंगे एवं अधिकांशतया मुख्य कार्यों को आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सुशील एवं विन्रम स्वभाव की महिला होंगी तथा धन संचय के प्रति भी आप पूर्ण रूप से यत्नशील रहेंगी। जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य से भी आप सम्पन्न रहेंगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा अधिकांश सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी।

मकर राशि में पैदा होने के कारण आपका कद ऊँचा रहेगा तथा मस्तक भी विशालता से युक्त रहेगा। आपकी आँखे तथा शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय रहेंगी। साथ ही कंठ एवं कान दीर्घता से युक्त रहेंगे। संगीत के प्रति आपका विशेष आकर्षण रहेगा। तथा संगीत शास्त्र की आप अच्छी ज्ञाता होंगी। आप शीत से प्रायः अपने अन्दर व्याकुलता की अनूभूति करेंगी। तथा इसको सहन करने में आप अपने आप को असमर्थ सा महसूस करेंगी। आपका

सत्य के प्रति विशेष निष्ठाभाव रहेगा। अतः जीवन में यत्न पूर्वक इसका पालन करने में आप तत्पर रहेंगी। इसके साथ ही धर्म पालन में भी आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक इसका पालन करने में तत्पर रहेंगी। समाज में आप आदरणीय रहेंगी तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि होगी। यदा कदा आप अल्प मात्रा में क्रोध का भी प्रदर्शन करेंगी। आप सभी सामाजिक जनों के प्रति अपने मन में प्रेम एवं स्नेह का भाव रखेंगी। अपने से अधिक आयु वाले लोगों के प्रति आपके मन में विशेष आकर्षण रहेगा तथा उन्हीं से आप विशेष रूप से मित्रता करना पसन्द करेंगी। आप एक कवियत्री भी हो सकती हैं।

गीतज्ञः शीतभीरुः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोऽल्परोषो मनसिभवयुतो निर्घृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरुयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोऽतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोऽतिकर्णः।।
सारावली

आप अपनी पारिवारिक समस्याओं में व्यस्त रहेंगी तथा यत्न पूर्वक पारिवार का लालन पालन करने में तत्पर रहेंगी। धर्म का आप वाहयरूप में आचरण रखने का अत्यधिक मात्रा में प्रदर्शन करेंगी। आप अन्य लोगों की बातों से शीघ्र सहमत होने वाली प्रवृति की महिला होंगी तथा उन्हीं के कहे अनुसार कार्य भी करेंगी। इससे आप कभी कभी अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न करेंगी। साथ ही आलस का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा। लेकिन आप एक भाग्यशाली महिला होंगी। अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से स्वतः सिद्ध हो जाएंगे। आप अपना अधिकाँश समय भ्रमण या यात्राएं करने में भी व्यतीत करेंगी। शारीरिक बल भी आप में मध्यम ही रहेगा परन्तु साहसी प्रवृति होने के कारण आप कठिन कार्यो को करने के लिए सर्वदा उत्सुक रहेंगी। आपके हृदय में दया एवं करूणा की भावना भी रहेगी तथा विभिन्न समय पर उत्पन्न वात रोगों से आप व्याकुलता की अनुभूति करेंगी। इसके अतिरिक्त सत्वगुणों की भी आप में प्रधानता रहेगी।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोऽधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोऽलसः।।
शीतालुर्मनुजोऽटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोऽघृणः।।
बृहज्जातकम्

परिवार के बीच में आप सामान्य सम्मान अर्जित करेंगी तथा कुल की रीति की वृद्धि करने में हमेशा सहायक सिद्ध होंगी एवं इस कार्य के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगी। आप अपने पति को वश में करने में सफल रहेंगी तथा वे सभी कार्य आपके अनुसार ही सम्पन्न करेंगे। आपको धर्म शास्त्र का भी अच्छा ज्ञान रहेगा। अतः आप एक विदुषी भी समझी जाएंगी। सुन्दर एवं भद्र पुरुषों से आप को हमेशा आदर तथा प्रशंसा प्राप्त होगी। माता के प्रति आपका विशेष स्नेह रहेगा एवं पुत्र आदि संततियों से भी युक्त रहेंगी। बन्धु वर्ग से आप विशेष सम्मानित रहेंगी। साथ ही आप में त्याग की भावना भी विद्यमान रहेगी जिसका आप

समयानुसार प्रदर्शन करती रहेंगी। आपके सभी सेवक सुन्दर एवं गुणवान होंगे। आपका परिवार भी विस्तृत रहेगा तथा दया भाव भी आप में विद्यमान रहेगा। सुख प्राप्ति की आपको विशेष चिन्ता रहेगी तथा इसे प्राप्त करने के लिए नित्य यत्नशील रहेंगी।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

आप अपने जीवन काल में किसी अन्य व्यक्ति की धन सम्पत्ति को उपयोग करने वाली होंगी। साथ ही अन्य सामाजिक जनों के कल्याणकारी कार्यों के लिए भी आप चिन्तित रहेंगी तथा यत्न पूर्वक इसके समाधान के लिए तत्पर रहेंगी। आप मंत्रणा या सलाह देने आदि कार्यों में भी प्रवीण रहेंगी। बन्धुओं की आप मुख्य सहयोगी रहेंगी तथा उन्हें हर प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आप में साहस का भाव भी विद्यमान रहेगा।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

आपका गीतशास्त्र में विशेष अनुराग रहेगा तथा इसकी अच्छी ज्ञाता भी रहेंगी। फलतः इस क्षेत्र में आप विशेष योग्यता तथा ख्याति अर्जित करने में भी सफल हो सकेंगी। आपका शरीर कान्ति तथा लावण्यता से युक्त रहेगा। अतः शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा। इसके अतिरिक्त काम भावना की भी आप में प्रवलता रहेगी।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरुषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरुषो भवेत्।।
जातका भरणम्

मनुष्य गण में पैदा होने के कारण आप धार्मिक प्रवृति से युक्त रहेंगी। तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में गहन श्रद्धा तथा सेवाभाव विद्यमान रहेगा एवं समयानुसार आप अपनी इस प्रवृति का अनुपालन भी करती रहेंगी। आपके मन में दया एवं करूणा का भाव भी रहेगा। फलतः अन्य जनों की सेवा सहायता करना आप अपना मुख्य कर्तव्य समझेंगी। परन्तु कभी कभी आप की अभिमानी वृति भी जागृत होगी जिसका अन्य जनों पर अनुकूल प्रभाव नहीं होगा। आपमें शारीरिक बल की पूर्णता रहेगी तथा स्वबल से ही महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करेंगी। आप विभिन्न प्रकार के कार्यों तथा कलाओं में भी दक्ष रहेंगी एवं नाना प्रकार के शास्त्रों का ज्ञान होने के कारण समाज में एक विदुषी की तरह सम्मान अर्जित करेंगी। आपका शरीर कान्तिमय रहेगा तथा परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों को भी आप सुख प्रदान

करने में भी सफल रहेंगी।

आप एक धनाढ्य तथा सम्मानीय महिला होंगी तथा आपकी आँखें अत्यधिक सुन्दरता को प्राप्त रहेंगी। जीवन में सर्व प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से आप युक्त रहकर इसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगी। निशानेबाजी में आप अत्याधिक निपुणता का प्रदर्शन करके इसमें विशेष योग्यता एवं ख्याति अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। आपका गौरवर्ण होगा तथा समाज में सभी जनों के ऊपर आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

नकुलयोनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से ही परोपकारी स्वभाव की होंगी तथा नित्य चतुराई पूर्वक अन्य जनों की भलाई के कार्यो में तत्पर रहेंगी। अतः समाज से आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्राप्त होगा। आप एक धनवान महिला होंगी। तथा अन्य धनवान लोग भी आपका सम्मान करेंगे। साथ ही आप एक उत्तम विदुषी होंगी तथा कई संस्थाओं में अपनी प्रधान भूमिका निभाएंगी। माता पिता का आपके प्रति विशेष स्नेह भाव रहेगा तथा आप भी उन को पूर्ण हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगी।

परोपकरणे दक्षो वित्तेश्वरविचक्षणः।
पितृमातृप्रियो नित्यं नरो नकुलयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् नकुलयोनि में उत्पन्न जातस दक्षता के साथ दूसरों का उपकारी, धनियों में सबसे उत्तम और प्रधान तथा पिता-माता में सर्वदा प्रेम बनाए रखने वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान

करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अप्रैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों रोहिणी नक्षत्र वैधृतियोग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य व्यापार प्रारम्भ नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही मंगलवार चतुर्थ प्रहर एवं वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ के प्रति भी विशेष रूप से सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए प्रतिकूल समय चल रहा हो, मानसिक चिन्ता शारीरिक व्याकुलता व्यापार में हानि नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं, तथा अन्य शुभ कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की श्रद्धापूर्वक पूजन करना चाहिए तथा शनिवार के उपवास भी रखने चाहिए। इसके साथ ही सोना, नीलम, लोहा, पंचधातु, तिल, कम्बल, तेल तथा चर्मपादुका आदि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक किसी योग्य पात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम किसी योग्य विद्वान के द्वारा

19000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपकी मानसिक चिन्ताएं तथा शारीरिक व्याकुलता दूर होगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव खत्म होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी। साथ ही अन्यत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

Acharya Ashok Shukla Vedpathi   Shiva Shiv Astrology Research Centre
Brahmavidyapeeth Shukatirtha
9897180017
ashok.shukla.mzn@gmail.com